डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा
प्रधानाचार्य सह ऐसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, सी.एम.जे.कॉलेज दोनवारीहाट खुटौना, मधुबनी– 847227
Email ID: principalcmjcollege@gmail.com Web:www.cmjcollege.com Mob.No 8544513344

हिन्दी प्रतिष्ठा पार्ट–II के छात्रों के लिए कोर्स मैटेरियल (दिनांक–13 मई, 2020)

नयी कविता की वैचारिकता

छायावादी कविता में पाठ की केन्द्रीयता, संस्कृतनिष्ठ जटिलता और संप्रेषण की बोझिलता ने सामाजिक तथा राष्ट्रीय चेतना की व्यापकता को ठेस पहुंचाया। कविता और आलोचना दोनों में परंपरागत मूल्यों की खोज ने जीवन और संघर्ष को आम जनता की समस्याओं से काटकर परंपरा, अतीत और पुनरुत्थान की भूलभूलैया से जोड़ दिया। छायावादी कवियों को जब यह महसूस हुआ तो वे प्रगतिषील विचारों को अपनी कविता में स्थान देने लगे। पंत ने छायावाद युग के अंत की घोषणा 'युगांत' से की। प्रगतिवादी कविता ने 1935 ई0 में ई0 एम0 फोस्टर के नेतृत्व में स्थापित 'प्रोग्रेसिव राइटर्स एसोसिएषन' तथा भारत में 1936 में 'प्रगतिषील लेखक संघ' की स्थापना और ब्रिटेन में लेबरपार्टी की जीत से प्रभावित होकर मजदूर और किसान के जीवन संघर्ष के यथार्थ को महत्त्व दिया और साम्यवादी व्यवस्था को पाने की ललक में मार्क्सवाद की वैचारिकता को ग्रहण किया। इस प्रकार छायावादी कविता का आदर्ष व्यक्ति के सुख–दुख की कहानी है। विषयवस्तु की खोज में कवि बाहर नहीं अपने मन के भीतर ही झांकता है। पुनरूत्थान के लिए वह 'मनुस्मृति', और 'रामायण' की संवेदना पाता है। प्रगतिवादी साहित्य का आदर्ष वर्गसंघर्ष और दबे–कुचले वर्ग की मुक्ति का चित्रण है। इसके विरुद्ध प्रयोगवाद और नयी कविता का आदर्ष आधुनिकता एवं नये मूल्यों की स्थापना है।

द्वितीय विष्वयुद्ध (1939 ई0 1943) की षुरुआत, पूरी दुनिया की संलग्नता और उसके वीभत्स परिणाम ने वैष्विक स्तर पर पूरी दुनिया और नये आधुनिक विचारों के साथ नये सिरे से सोचने समझने का अवसर दिया। प्रयोगवाद में नये प्रयोगों की प्रवृत्ति या प्रयोगषीलता का आधार आधुनिकता और नये मानव मूल्यों की स्थापना इन्हीं परिस्थितियों की देन है। औद्योगिक पूँजीवाद और द्वितीय विष्वयुद्ध के अमेरिकी वर्चस्व ने जिस व्यक्तिवादी चेतना का विकास किया, फ्रायड, सार्त्र और डार्विन ने जिस मनोविष्लेषण, अस्तित्ववाद और विकासवाद की खोज की उन सबसे प्रयोगवाद और नयी कविता के कवि अछूते नहीं रहे। प्रगतिवाद का सामाजिक दबाव प्रयोगवाद और नयी कविता में एकदम से व्यक्तिवाद में परिणत हो गया। सामाजिक मूल्यों की जगह आधुनिक विचारों के साथ व्यक्ति की समस्या का समाधान मानव मूल्यों– व्यक्ति, उसके व्यक्तित्व, अस्तित्व, स्वतंत्रता और समाज में व्यक्ति की पहचान की खोज में होने लगी। इस प्रकार प्रयोगवाद और नयी कविता के केन्द्र में समाज की जगह व्यक्ति और उसके अंतर्मन की मनोवैज्ञानिक अभिव्यक्ति है। अंतर्मन की बात के साथ ही ये कवि विषयवस्तु की खोज में अपने से बाहर समाज को पकड़ने की कोषिष भी करते रहे हैं। निज व्यक्तित्व का प्रदर्षन और अहंभावना छायावादी काव्य की विषेषता भी रही है।

प्रयोगवाद और नयी कविता दोनों के पुरोधा अज्ञेय हैं। प्रयोगवाद का आरंभ 1943 ई0 में अज्ञेय द्वारा संपादित 'तारसप्तक' से होता है। 'दूसरा सप्तक'(1951 ई0) में मार्क्सवादी खेमे और अज्ञेयवादी खेमें का विवाद 'प्रयोगषील' और 'प्रयोग' षब्द को लेकर हुआ। इसमें स्पष्ट हुआ कि प्रयोग एक साधन है, जिसका दोहरा महत्त्व है। इस विवाद से मुक्ति के लिए अज्ञेय

को 'दूसरा सप्तक' की भूमिका में स्पष्ट करना पड़ा कि ''प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है, वह साधन है। और दोहरा साधन है। क्योंकि एक तो उस सत्य को जानने का साधन है, जिसे कवि प्रेषित करता है, दूसरे वह इस प्रेषण की क्रिया को और उसके साधनों को जानने का साधन है। अर्थात् प्रयोग द्वारा कवि अपने सत्य को अधिक अच्छी तरह जान सकता है। वस्तु और षिल्प दोनों के क्षेत्र में प्रयोग फलप्रद होता है।''

प्रयोगवाद को नयी कविता से अलग न मानकर नयी कविता की पृष्ठभूमि के रूप में देखा जा सकता है। क्योंकि नयी कविता मूलतः प्रयोगवाद का विकास है। अज्ञेय ने साहित्य की रूढ़ स्थिर धारा को बदलकर समय और वातावरण के मुताबिक एक नयी दिषा की ओर मोड़ा। यह टर्निंग प्वाइंट अभिव्यक्ति की नवीनता, आधुनिकता, प्रयोगषीलता, नये सत्य की खोज तथा वस्तु और षिल्प की नवीनता का उद्घोष है। 1930–40 के आसपास साम्यवाद आधुनिकता का मानदंड था। इस साम्यवाद को स्टीफन स्पेन्डर जैसे विचारक ने 'गॉड दैट फेल्ड' कहकर नकारा था। 'गॉड दैट फेल्ड' की प्रतिक्रिया में 'न्यू सिग्नेचर' आया तो प्रयोगवाद या नयी कविता पारंपरिक रूढ़ छायावाद और प्रगतिवाद की प्रतिक्रिया में।

वैसे प्रयोगवाद और नयी कविता को अलगा कर भी देखा जा सकता है। 1943 ई0 से 1951 ई0 तक की कविता को प्रयोगवादी कविता कहते हैं। कुछ लोग इसे 1954 में प्रकाषित 'नयी कविता' पत्रिका से मानते हैं, जो ठीक नहीं है। 'दूसरा सप्तक' 1951 ई0 के प्रकाषन के साथ प्रयोगवाद नयी कविता में घुल–मिलकर रूपान्तरित हो जाता है। पुनः एक बार फिर वही आधुनिकता, अभिव्यक्ति की नवीनता, नयी प्रयोगषीलता, नये सत्य की खोज, नयी भाषा और नये षिल्प की संरचना बिल्कुल अभिनव रूप में दिखने लगता है। साहित्य में आलोचना को कृति से हटाकर प्रकृति, जीवन, कला तथा साहित्य के विविध रूपों तथा उनके संबंधों को ध्यान में रखते हुए की गयी। प्रयोगवादी कवियों में मुख्यतः वे ही कवि हैं, जिन्हें 'तारसप्तक' में स्थान मिला था। अज्ञेय, गिरिजा कुमार माथुर, मुक्तिबोध, नेमिचन्द्र जैन, भारत भूषण अग्रवाल, रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती हैं। इनके अलावे नकेनवादियों या प्रपद्यवादी कवियों नलिन विलोचन षर्मा, केसरी कुमार और नरेष मेहता आदि हैं।

नयी कविता के कवियों में आमतौर पर दूसरा और तीसरा सप्तक में संकलित कवियों को माना जाता है। दूसरा सप्तक के कवि हैं– रघुवीर सहाय, धर्मवीर भारती, नरेष मेहता, षमषेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, षकुंतला माथुर और हरि नारायण व्यास मुख्य हैं। 'तीसरा सप्तक' के कवियों में कीर्ति चौधरी, प्रयाग नारायण त्रिपाठी, केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण षाही, सर्वेष्वर दयाल सक्सेना और मदन वात्स्यायन हैं। इनके अतिरिक्त अन्य कवियों में मुख्य हैं– श्रीकांत वर्मा, दुष्यंत कुमार, मलयज, सुरेन्द्र तिवारी, धूमिल, लक्ष्मीकांत वर्मा, अषोक वाजपेयी, चन्द्रकान्त देवताले आदि।

नयी कविता आंदोलन में एक साथ भिन्न–भिन्न वाद एवं दर्षन से जुड़े रचनाकार षामिल हुए। अज्ञेय आधुनिक भावबोधवादी–अस्तित्ववादी या व्यक्तित्ववादी हैं तो मुक्तिबोध, केदारनाथ सिंह, नागार्जुन आदि मार्क्सवादी–समाजवादी विचारधारा के कवि। भवानी प्रसाद मिश्र यदि गाँधीवादी हैं तो रघुवीर सहाय, सर्वेष्वर दयाल सक्सेना आदि लोहियावादी व समाजवादी हैं। इसके उलट धर्मवीर भारती की रूचि प्रेम संबंधों व देहवाद में है।

इस प्रकार नयी कविता में परंपरा और इतिहास से मुठभेड़, आधुनिकताबोध, मूल्यबोध, बौद्धिकता तथा व्यक्ति और समाज का द्वन्द्व मिलता है, जो आधुनिक समय के इतिहास से निरन्तर सामाजिक जरूरत और सत्य के अन्वेषण से संघर्ष का परिणाम है।

दिनांक : 13/05/2020 **– डॉ. महेश प्रसाद सिन्हा**